DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण

Part -4

LIVE 02-05-2024 05:00 PM

भारोपीय परिवार की भाषा

भारोपीय परिवार सबसे बड़ा सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बोलने वाले अमेरिका से न्यूज़िलैंड तक विस्तृत भूभाग में बसे हैं। भारोपीय परिवार की भाषाएँ बोलने वालों की संख्या विश्व में सबसे अधिक है।

प्रारंभ से आज तक इस परिवार का नाम विवादास्पद रहा है। इसके नाम प्रमुख हैं :

1.इंडोजर्मेनिक: पहले इस भाषा परिवार के पूर्वी छोर पर भारत व पश्चिमो छोर पर जमर्नी के होने के कारण जर्मन विद्वानों ने इंडोजर्मेनिक नाम दिया था। बाद में कुछ विद्वानों ने इसे इंडोकेल्टिक नाम दिया परंतु इस नाम से इस परिवार की सही रूपरेखा स्पष्ट नहीं होती है।

भारत-यूरोप

भारोपीय भाषा परिवार (Indo-European)

प्रो. अस्कोली — श्रेय

शतम्

संस्कृत

अवेस्ता

1. भारत-ईरानी
2. बाल्टो-स्लाविक
3. आर्मीनी
4. अल्बानी

केन्टुम्

1. ग्रीक
2. केल्टिक
3. जर्मानिक
4. इटैलिक
5. हिटाइट
6. तोखारी

2. आर्य परिवारः इस परिवार को बाद में आर्य परिवार भी कहा गया, परंतु फ्रांस आदि देशों ने इस नाम के विरुद्ध दो तर्क उपस्थित किये-

(क) इस परिवार की भाषाओं के बोलने वाले केवल आर्य जाति के होंगे, ऐसा भ्रम होता है।

(ख) आर्य शब्द का व्यवहार सामान्यतः इस परिवार की हिंदी ईरानी शाखा के लिए अधिक उचित है, क्योंकि इन दोनों देशों के लोग अपने को आर्य कहते हैं।

इसी प्रकार जफेटिक, सैमेटिक, हैमेटिक के वजन पर इसको जेमेटिक नाम भी दिया गया पर अवैज्ञानिक होने के कारण यह नाम अमान्य रहा। साथ ही अनेक जेमेटिक कहलाने वाले लोगों की भापा भारोपीय परिवार से दूर है। बाइबिल में इसी आधार पर मनुष्यों का वर्गीकरण किया गया है।

इस प्रकार कुछ विद्वानों ने इस परिवार को सांस्कृतिक काकेशियन नाम भी दिया परंतु यह नाम प्रभावित नहीं हुआ। भारोपीय या इंडोयूरोपीयन नाम आजकल प्रचलित है। यह नाम क्षेत्र के आधार पर है। परंतु अब अमरीका, अफ्रीका के बहुत से भागों में भी इस परिवार की भापाएँ बोली जाती हैं। जैसे अंग्रेजी, डच, स्पेनिश, फ्रेंस। परंतु इस परिवार के अन्य नामों की तुलना में यह अधिक सार्थक है। इसीलिए यही प्रचलित हैं।

भारोपीय परिवार की भाषाओं का वर्गीकरण

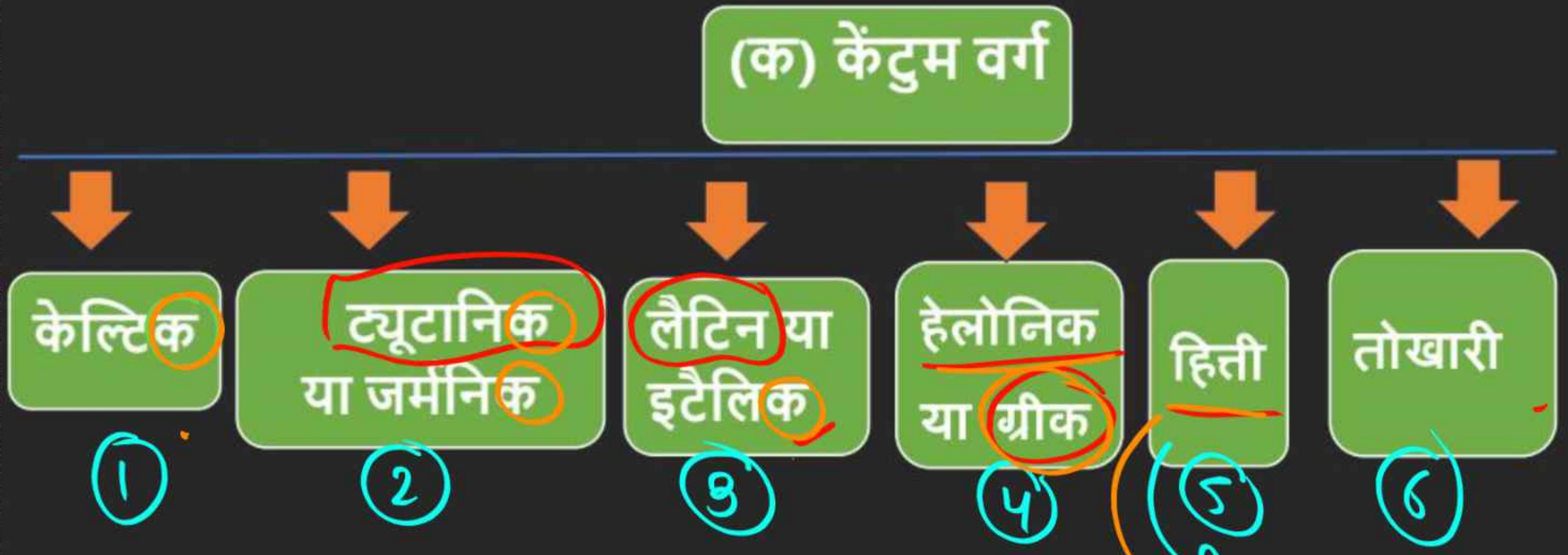

1. केल्टिकः आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व इस भाषा की शाखाएँ यूरोप के विस्तृत क्षेत्रों में बोली जाती थीं, किन्तु अब आयरलैंड, स्काटलैंड, मानद्वीप तथा कार्नवाल के कुछ भागों में इसका क्षेत्र शेष रह गया है। केल्टिक में आदिम भाषा का कब कहीं व्/ तथा कहीं /क के रूप में विद्यमान है। इस शाखा का इटैलिक से घनिष्ठ संबंध है।

इस शाखा के तीन वर्ग माने जाते हैं:

क) गाली

ख) गोइडेली-आइरिश, स्काच, मेक्स

ग) ब्रादानी

2. ट्यूटेनिक या जर्मेनिक जर्मन शब्द का अर्थ है पड़ोसी। यह भारोपीय परिवार में सबसे महत्वपूर्ण शाखा है। अंग्रेजी, जर्मन, डच आदि इसी की भाषाएँ हैं। इसका प्राचीन रूप गाथिक आदि भाषाओं में मिलता है। प्राचीन सामग्री के आधार पर इस शाखा के अंतर्गत भाषाओं के तीन समूह हैं।

क) उत्तरी ट्यूनिक इसकी दो शाखाएँ हुई-

1) पश्चिमी स्कैंडिनेवी

2) पूर्वी स्कैंडिनेवी

ख) पूर्वी समूह इसकी मुख्य भाषा गाथिक है। भारोपीय की पुरानी बातें इसमें सुरक्षित हैं। यह भाषा संस्कृत के निकट मानी जाती है।

ग) पश्चिमी समूहः इसकी तीन साराहएँ हैं।

1) इंग्लिश इंग्लिश का नाम आंगल जाति के नाम पर पड़ा। व्याज यह 25 करोड़ व्यक्तियों की भाषा है साथ ही अंतर्राष्ट्रीय भाषा भी है।

2) जर्मन इसकी दो शाखाएँ हैं।

क) जर्मन

ख) निम्न जर्मन

3) डच: यह मुख्य रूप में हॉलैंड की भाषा है।
इस भाषा को सभी भाषाएँ श्लिष्ट योगात्मक से अयोगात्मक होती जा रही हैं।

3. इटैलिक लैटिन इसको लैटिन (लातिनी भी कहते हैं। यह भाषा इस परिवार की प्राचीन भाषाओं में से है और अब भी वर्तमान है। इसी से रोमांस भाषाएँ निकली है। लैटिन रोम की भाषा थी। रोम साम्राज्य के विन्न-छिन्न होने पर इसका साहित्यिक महत्व तो काफी समय तक रहा, परंतु कालांतर में बोल-चाल की भाषाओं ने इसको पराजित कर दिया। हेय, इशालय, स्पैनिश पुर्तगाली और दोमेनियन प्रमुख लातिनी (Romance) भाषाएँ हैं।

4. हेलेनिक ग्रीक इसको ग्रीक शाखा भी कहते हैं। केंतुम समूह में यह शाखा सबसे प्राचीन है। महाकवि होमर के इलियड और ओडिसी महाकाव्य इसी के प्राचीन उदाहरण हैं। सुकरात तथा अरस्तू ने की अपने विचार इसी भाषा में व्यक्त किये थे। इस भाषा का आधुनिक रूप यूनान देश की बौलियों में प्राप्त है।

ग्रीक और संस्कृति में बहुत समानावाएँ हैं। ग्रीक में मूल स्वर सुरक्षित हैं तो संस्कृत में मूल जन्म। समास और बाच्य भी पोन्डे में समान हैं। लकारों की समृद्धि संस्कृत में अधिक है।

5. हिट्टी 16वीं शती के उत्तरार्द्ध में बोगजमुई की खुदाई में इसका रूप कीलाक्षरों में मिला था। ऐसा विचार है कि भारोपीय परिवार से कुछ शब्द उधार लेकर इस ने अपनाए। विभक्तियाँ और सर्वनाम संस्कृत और लैटिन से बहुत अंशों से मिलते हैं। परंतु अनेक विद्वान इस भाषा को मूल भारोपीय भाषा से भी प्राचीन मानते हैं।

6. तोखारी अंग्रेजी फैंच, रूसी तथा जर्मन विद्वानों ने पूर्वीय तुर्किस्तान के तुरकान प्रदेश में 20वीं शदी के आरंभ में कुछ ग्रंथ पाए जो भारतीय लिपि (ब्रह्मी तथा खरोष्ठी) में थे। फलस्वरूप यह भाषा भारोपीय परिवार की सिद्ध हुई। बोलने वाले तोखार लोग थे। इसलिए यह तोखारी कहलाई।

इस भाषा में स्वरों की जटिलता कम है। संधि नियम संस्कृत जैसे हैं। विभक्तियाँ भी आठ हैं। शब्द भंडार संस्कृत के समीप है।

(ख) शतम् वर्ग

- आर्य (या भारत-ईरानी) — ①
- आर्मोनियम — आर्मीनी — ②
- बाल्टिक — ③
- स्लैवोनिक — ③
- इलीरियन — अल्बानी — ④

1 इलीरियन इसका क्षेत्र इटली के आस-पास है। इसकी एक शाखा अल्वेलियन है। उसी के लिय ये कुछ सामग्री प्राप्त है। इसलिए इस शाखा को अल्बेलियन भी कहा जाता है। उसके बोलने वाले अल्बेरिया और ग्रीस में रहते हैं। अल्बेलियन साहित्य लगभग 17 वीं सदी से प्रारंभ होता है। इसके पूर्वका रूप इस भाषा का नहीं मिलता। अतः इसका ऐतिहासिक अध्ययन नहीं किया जा सकता। इस भाषा ने तुर्की, लैटिन ग्रीक आदि के भी शब्द लिए हैं। इसलिए यह भी जानना कठिन है कि इसके अपने शब्द कितने हैं।

बहुत दिनों तक विद्वान इसे स्वतंत्र शाखा मानने को तैयार नहीं थे। परंतु किसी से पूर्णतः मेल न खाने पर इसे अलग माना ही गया है।

2. बाल्टिक इस वर्ग की तीन भाषाएँ हैं

क) प्राचीन काल इसका स्थान प्राचीन प्रशा प्रदेश है। 15वीं सदी के बाद की तथा 16वीं सदी की लिखी हुई पुस्तकें इसमें मिलती है। यह भाषा 17वीं सदी में समाप्त हो गई। - प्राशियन

ख) लिथुआनियाः इसका क्षेत्र प्रथा के उत्तर पूर्व में है। इसका साहित्य 16वीं सदी के बाद से आरंभ होता है। इसकी प्रसिद्ध पुस्तक महाकवि दोगेलेटिस की सीजन्स है। इसका रचना काल 1750 है। वैज्ञानिकों की दृष्टि से यह भाषा बड़ी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ है। इसी कारण आज भी यह मूल भारोपीय भाषा से अधिक दूर नहीं। इसमें अब भी एष्टि (अस्ति) एवं जीवा जैसे रूप मिलते है। वैदिक संस्कृत की भाँति इसमें अभी भी संगीतात्मकता और द्विवचन है।

ग) लैट्विशः यह रूस के पश्चिमी भाग में लेटविया राज्य की भाषा है। यह लिथुआनियन से अधिक विकसित है। उसमें भी साहित्य का अध्ययन 16वीं सदी में हुआ है। इस भाषा के अधिक विकसित होने के कारण बाल्टिक शाखा को लेटिश शाखा भी कहते हैं।

3. स्लेवोनिक यह एक विस्तृत भाषा वर्ग है पूर्वी यूरोप का एक बड़ा भाग इसमें आता है दूसरी तीसरी सदी तक इस भाषा को बोलने, वाले एक सीमित क्षेत्र में रहते थे। 5 वीं संदी के बाद से ये लोग इधर-उधर फैलने लगे। 9 वीं सदी तक रूस, पौलैंड, बलगारिया इसके प्रभाव में आ गये। इसके तीन भाग किये जा सकते है।

क) पूर्वी शाखा: इसकी भी तीन भाषाएँ हैं (1) महारूसी (2) श्वेत रूसी और (3) लघु रूसी। रूसी रूस की प्रधान भाषा है। 18वीं सदी के पूर्व तक या बहुत-अस्त-व्यस्त थी। उसके बाद इसे टकसाली रूप मिला। श्वेत रूसी रूस के दक्षिण में बोली जाती है। लघु रूसी का दूसरा नाम रूथेनियन भी है। इसके कुछ बोलने वाले आस्ट्रिया में भी मिलते है।

ख) पश्चिमी शाखा इसकी प्रधान भाषा चेक है। यह प्रधानतः बोहेमिया की भाषा है। अतः इसका नाम बोहेमियन भी है। इसका नियमित साहित्य 12 वीं सदी से मिलता है। इस शाखा में पोलिश भाषा भी आती है। इसका मूल क्षेत्र अब केवल पोलैंड है।

ग) दक्षिणी शाखाः इसकी प्रसिद्ध भाषा बल्गेरियन है। इसके प्राचीन रूप को चचर् स्लैवोनिक कहा जाता है। इसमें बाइबिल का अनुवाद 6 वीं सदी के मध्य में हुआ था वर्तमान बल्गेरियन पूर्णतः वियोगात्मक हो गई है। इसके शब्द ग्रीक, अल्बेनियन, रूमेनियन तथा तुर्की के शब्दों की तरह है। इसका प्रधान क्षेत्र बलगेरिया के अतिरिक्त यूरोपीय तुर्की तथा ग्रीस आदि भी है।

4. आरमेनियन कुछ लोग इस शाखा को आर्य शाखा के अंतर्गत रखना चाहते हैं, क्योंकि इसके अनेक शब्द ईरानी से मिलाते हैं। परंतु ये शब्द केवल उधार लिये गये हैं। 5वीं सदी में आर्मिनिया पर ईरान के युवराज का राज्य था। इसी कारण इसमें ईरानी शब्दों का बाहुल्य है। इस भाषा की योगात्मकता और ध्वनि आदि ईरानी से नितांत भिन्न है। इसके नवीन रूप का प्रयोग धार्मिक कार्यो में अब भी होता है। इस भाषा को आर्य और ग्रीक के बीच की कड़ी कहा जाता है।

वर्तमान आर्मेनियन के प्रधान दो रूप है। एक का प्रयोग एशिया में होता है और दूसरे का यूरोप में। एशिया में बोली जाने वाली का नाम अरास्ट है और यूरोप में बोली जाने वाली को स्तुंबल कहते हैं। स्तांबुल में साहित्य रचना भी होती है। यही इसकी प्रधान बोली है।

भारत-ईरानी उपवर्ग

शतम् वर्ग की एक महत्त्वपूर्ण शाखा भारत-ईरानी भाषाओं का है। इसके बोलने वालों की संख्या विश्व की आबादी का लगभग 20 प्रतिशत है। ईरान की फ़ारसी, अफगानिस्तान की पश्तो, पाकिस्तान की भाषाएँ उत्तर भारत की आर्य भाषाएँ, नेपाल, बागंलादेश की बांग्ला, श्रीलंका की सिहंली भाषाएँ इसी शाखा में आती है।

भारोपीय परिवार की यह महत्वपूर्ण और अत्यंत प्राचीन शाखा है। ऋग्वेद के समान पुराना और समृद्ध साहित्य इस परिवार की किसी अन्य भाषा में नहीं मिलता। इसकी कुछ ऋचाएँ ढाई हजार वर्ष ई.पू की लिखी मानी जाती है। पारसियों का धर्म ग्रंथ जेंद अवेस्ता भी लगभग 7वीं. सदी ई.पू. का है। इस शाखा की भाषाओं ने भाषा-विज्ञान के अध्ययन के लिए पर्याप्त सामग्री प्रदान की है।

विद्वानों की मान्यता है कि जब आर्य जाति अन्य भारोपीयों का साथ छोड़ने के बाद आगे बढ़ी तो कुछ लोग ईरान में रूक गये और कुछ आगे बढ़कर भारत में आ बसे। इस प्रकार इसकी भारतीय और ईरानी दो प्रमुख शाखाएँ हो गई। इन दोनों को भारोपीय परिवार की अलग-अलग शाखा मानना वैज्ञानिक नहीं है, क्योंकि ये दोनों बहुत सी बातों में साम्य रखती है, जिससे स्पष्ट है कि ये दोनों एक शाखा के रूप में थी। वास्तव में इस शाखा के तीन भाषा समूह हैः

1. ईरानी
2. दरद
3. भारतीय

भारत - ईरानी
↓ ↓
संस्कृत अवेस्ता

1. ईरानी ईरानी भाषा का प्राचीनतम साहित्य पारसी धर्म-ग्रंथ जेंद अवेस्ता है। इसकी भाषा ऋग्वेद से बहुत कुछ मिलती है। इसके अतिरिक्त छठी सदी ई. के कुछ शिलालेख भी ईरानी में मिलते हैं। पश्तु, पश्तु, बलूची, आधुनिक फारसी आदि इसी शाखा की भाषाएँ हैं। मूल रूप में ईरानी शाखा के दो भेद है। ईरानी के ऐतिहासिक क्रम तीन रूप है

- प्राचीन ईरानी
- मध्यकालीन ईरानी
- आधुनिक ईरानी

हम यहाँ प्राचीन ईरानी की बात करेंगें। इसके भी दो रूप हैः-

- अवेस्ता
- प्राचीन फारसी

अवेस्ता जरथुश्त्र के उपासक पारसी अवेस्ता को उसी तरह महत्व देते है, जैसे भारतीय आर्य वेदों को देते हैं। अवेस्ता का अर्थ है शास्त्र या ज्ञान ग्रंथ। अवेस्ता में गाथाएँ लिखी गई थीं जो वेदों के समान मानी जाती है। अवेस्ता में ईश्वर को अहुरमज्दा (असुरमेधा) कहा गया है। अवेस्ता में सोम, मित्र, वरूण अर्यता आदि देवताओं का उल्लेख है।

अवेस्ता की भाषा संस्कृत के काफी निकट है। इसमें भी आठ कारक, तीन वचन, तीन लिंग है। क्रिया रचना में भी साम्य है।

ध्वनि परिवर्तनों को ध्यान में रखकर देखें तो संस्कृत और अवेस्ता में साम्य देख सकते हैं। जैसें –

अवेस्ता	संस्कृत
आ-दिम पेरेसत् जरथुश्त्रो	आ तं (अ) पृच्छत् जरठोष्ट्रः
को नरै अही?	को नरो असि।

(उससे जरथुश्त्र ने पूछा – आप कौन पुरुष है?)

प्राचीन फारसी भी संस्कृत भाषा से बहुत मिलती थी। यह भाषा साम्य आधुनिक फारसी तक में परिलक्षिता होता है। फारसी के सैकड़ों शब्दों के समान रूप भारतीय भाषाओं में देखे जा सकते है। ऐसे शब्द है

कुर्दन (करना), खरीदन (कीत), बर्फ (वप्र) , दस्त (हस्त-हाथ), खुदा (स्वधा), दुख्तर (दुहितृ – पुत्री), अस्व (अश्व) साया (छाया), कुछ उपसर्ग जैसे बे (वि-) जैसे बेचारा, बेकार, पा (पाद – पैर) जैसे पाजामा।

मध्यकालीन फारसी भाषा का नाम पहलवी है। यह अपभ्रंश से बहुत मिलती है इसका आरंभिक ग्रंथ महाकवि फिरदौसी का शाहनामा है।

2.दरद यह संस्कृत का शब्द है, इसका अर्थ पर्वत है। इस परिवार की प्रमुख भाषा कश्मीरी है। इसका प्रभाव मराठी, सिंधी, पंजाबी पर भी है। पश्तों की भाँति दरद भी भारतीय और ईरानी के बीच की भाषा है। पश्तो ईरानी की ओर झुकी है, तो दरद भारतीय की और। प्राचीन काल में दरद भाषाओं को भारतीय परिवार का समझा गया था और उन्हें पैशाची प्राकृत की संज्ञा दी गई थी। परंतु अब इसे भारतीय आर्य भाषाओं से भिन्न एक स्वंतत्र उपभाषा माना जाता है।

भारत - ईरानी

3. आर्य: इस उपवर्ग में कश्मीरी के अतिरिक्त भारत में बोली जाने वाली अन्य आर्य भाषाएँ तथा संस्कृत हिंदी बांग्ला, गुजराती आदि आती हैं। इस उपवर्ग को इस कारण भारतीय आर्य भाषाए (Indo-Aryan languages) भी कहा जाता है।

संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय

भारोपीय भाषा परिवार की आर्य उपशाखा की भारतीय आर्य भाषा का परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण शाखा है। हिंदी का संबंध इसी शाखा से है। भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास लगभग साढ़े तीन हजार वार्षों का इतिहास है। दीर्घकाल को विकास की दृष्टि से तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है।

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल (1.500 से 500 तक)
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ई.पू से 1000 ई.पू. तक)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल (1000 ई.पू. से वर्तमान समय तक)

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का समय 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक माना जाता है। विकास की दृष्टि ने इस काल की भाषा के दो रूप मिलते हैं।

1. वैदिक संस्कृत
2. लौकिक संस्कृत

वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत

ऋग्वेद को भाषा की तुलना यदि लौकिक संस्कृत में की जाए तो स्पष्ट अंतर प्रातिपादिकों की विभक्तियों में तथा धातु रूपों में मिलता है।

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ लगभग पन्द्रह सौ वर्षों तक इस देश में प्रचलित रही।

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा

आदिकाल (पालि) | मध्यकाल(प्राकृत) | उत्तरकाल (अपभ्रंश)

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का आदिकाल

इस काल के अंतर्गत पालि एवं अशोक के शिलालेखों की भाषाएँ आती हैं। पाली में संस्कृत के ऋ, ॠ, ऌ , ऐ और औ स्वर लुप्त हो गए। ह्रस्व ए(ए) और ह्रस्व ओ (ऑ) अविर्भाव हो गया। ये ह्रस्व ऍ और ऑ वैदिक संस्कृत की किसी विभाषा में प्राप्त ए हो।

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का मध्यकाल

इसके अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक प्राकृतें आती हैं। प्राकृतें विभिन्न जनपदों की लोक भापाएँ थीं। प्राकृत भाषा के सर्वप्रथम व्याकरण, प्राकृत-प्रकाश में बररुचि ने चार प्राकृत भाषाओं का शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत किया है।

1. महाराष्ट्री (महाराष्ट्र)
2. पैशाची (सिंध)
3. मागधी (मगध)
4. शौरसेनी (मथुरा के आस-पास)
5. अर्ध मागधी (कोसल)

भारतीय आर्य़ भाषा को ऐतिहासिक दृष्टि से तीन काल खंड़ों में विभाजित किया जाता है।

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

सारांश

विश्व के विभिन्न भाषा परिवारों में भारोपीय भाषा परिवार अनेक दृष्टियों से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि इस भाषा परिवार के कई नाम प्रचलित हुए परंतु अब सर्वत्र भारोपीय भाषा परिवार स्वीकृत है।

इस भाषा परिवार के अंतर्गत भारत-ईरानी भाषा वर्ग की अपनी अलग विशेषताएँ है और इसी की उपयोगिता भारतीय आर्यभाषा परिवार कहलाती है जिसके अंतर्गत भारत में बोली जाने वाली समस्त आर्य भाषाएँ परिगणित की जाती है।

भारोपीय परिवार को ध्वनि व्यवस्था के आधार पर केंतुम और शतम् दो वर्गों में रखा गया है। सामान्यतः केंतुम इस परिवार की पश्चिमी शाखा का प्रतिनिधित्व करती है तो शतम् पूर्वी भाषाओं को संकेतित करती है।

कारक प्रकरण

भाषा विज्ञान

ध्वनि

अर्थ

Fri Sat

पद

वाक्य